यौवन-रक्षा

प्रकाशक—
कविराज महाराज कृष्ण एल. ए. एम. एस.
मुख्य चिकित्सक

कविराज हरनाम दास बी॰ए॰
गौरीशंकर मन्दिर के नीचे, लाल किले के सामने,
चांदनी चौक दिल्ली।

कविराजजी की रचनाएँ मिलने के ठिकाने:-

डाक द्वारा मंगाने तथा स्वयं लेने के पते :—

● कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड संज
गौरीशंकर मन्दिर के नीचे, लाल किले के सामने,
(फूल वालों के पीछे), चांदनी चौक, दिल्ली-६ ।

●

●● पुल बेगम, प्यारेलाल शर्मा रोड, मेरठ ।

●

●●● भारत भर के पुस्तक विक्रेता तथा अफ्रीका आदि के
हिन्दुस्तानी बुकसेलर ।

प्रकाशक—
कविराज महाराज कृष्ण एल. ए. एम. एस.
मुख्य चिकित्सक
कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड सन्ज
गौरीशंकर मन्दिर के नीचे, लाल किले के सामने,
(फूल वालों के पीछे), चांदनी चौक,
दिल्ली-६

ओ३म्

यौवन रक्षा

सारभूत कुछ लाभदायक परामर्श

प्यारे नवयुवानो ! आज के व्याख्यान में मैं आपको कुछ अत्यावश्यक, लाभदायक, मनोरञ्जक और शिक्षाप्रद बातें बताना चाहता हूं।

यह एक अनुभूत सत्य है कि सब दुःखों का मूल-कारण अज्ञानता है। मनुष्य स्वयं ही अपने लिए अनेक कष्ट उत्पन्न कर लेता है, क्योंकि उसे पता नहीं होता कि उसकी थोड़ी भूल का परिणाम कितना भयानक हो जाता है — इतना भयानक जो उसके समस्त जीवन को नीरस या कटु बना

मैं अनुभव करता हूं कि यदि युवा स्त्री-पुरुषों की अज्ञानता, दुर्बलता और त्रुटियां अधिक से अधिक दूर की जा सकें, और उनके पारिवारिक जीवन में सुधार किया जा सके, तो इसका इतना अच्छा परिणाम हो कि बच्चे-बूढ़े, छोटे बड़े, सब के सब सुखी हो जाएं, और शान्तिपूर्ण जीवन व्यतीत करने लगें।

इस संसार में आप जितने भी अपने-अपने कार्य में चतुर, विद्वान् या प्रवीण व्यक्ति देखते है, वे प्रायः ऐसे माता पिता की सन्तान हैं, जो समझदार, पराक्रमी, दूरदर्शी, सच्चे, धार्मिक और प्रकृति के नियमों के अनुसार चलने वाले थे। वे स्वयं अच्छे थे और उन्होंने अपनी सन्तान को भी अच्छा बनाया।

इसके विपरीत जितने दुर्बल, बीमार, चोर, डाकू, जुआरी, शराबी, दुराचारी, आलसी, कामी और व्यसनी पुरुष आप देखते हैं, उनमें से अधिकतर ऐसे माता-पिता की सन्तान है जो प्रायः मूर्ख, कामी और व्यसनी थे, और विवाहित रूप में जिनकी जीवनी असफल रही। पति-पत्नी में वे परस्पर एक दूसरे को प्रसन्न और सन्तुष्ट रखने का ढंग न जानते थे, वे आपस में लड़ते-झगड़ते रहते थे। लड़ाई-झगड़ा और तनाव-खिचाव के कारण जहां उनका अपना जीवन आनन्द से रहित और अशान्त बना रहा, वहां उनकी

सन्तान ने उनसे बुरी शिक्षाएं ग्रहण कीं, और उनका जीवन मुर्दों से भी गया गुज़रा रहा, तथा उनकी सन्तान बुराइयों का केन्द्र बन गई।

यह स्वयंसिद्ध बात है कि जीवन की सबसे बढ़कर मिठास युवा पति और पत्नी के भाग्य में आई है। हाँ, यदि वे दोनों अत्यन्त समझदार और चतुर हों, विशेषकर पति पर यह बहुत निर्भर है।

पुरातन काल की सुप्रसिद्ध संस्कृत पुस्तक 'रति रहस्य' में लिखा है कि जो पुरुष विवाहित जीवन के रहस्यों को नहीं जानता, अपनी युवा पत्नी के रहन-सहन, नीति-रीति, आचार-व्यवहार, हँसने-रोने, हाव-भाव की सूक्ष्मताओं और मौन-संकेतों (गूंगे इशारों) को नहीं समझता, वह अच्छी से अच्छी और सुन्दर से सुन्दर पत्नी का पति होता हुआ भी जीवन के अत्युत्तम आनन्दपूर्ण रहस्यों को नहीं पा सकता. जैसे कि "यदि मूर्ख बन्दर के हाथ में नारियल दिया जाय तो वह उससे अपना सिर फोड़ने के अतिरिक्त और कोई लाभ नहीं उठा सकता।" आजकल घरों में कितनी अनबन और कितने वैमनस्य दिखाई दे रहे हैं, थोड़े ही घर होंगे ऐसे जिनमें पति-पत्नी रुपये में सोलह आने एक दूसरे से प्रसन्न होंगे। साधारणतः बहुतों के दिल आपस में फटे पड़े हैं। उन्हें शिक्षा और उपदेश देने वाला कोई नहीं, अन्यथा उनके जीवन भी एक छोटे से सूत्र भेद से आनन्द, शान्ति और सुख से परिपूर्ण बन जाते। स्त्री और पुरुष का पति-पत्नी रूप में जो सम्बन्ध है, वह समस्त सांसारिक सम्बन्धों से अनूठा एवं निराला है। इस सम्बन्ध को सुदृढ़ और मधुमय बनाए रखने के रहस्यों से अपरिचित रहना सबसे बड़ी अज्ञानता और दुर्भाग्य है क्योंकि अविद्या और अज्ञान के ही कारण, पति-पत्नी एक दूसरे की इच्छाओं और आवश्यकताओं को न समझते हुए उन्हें पूर्ण नहीं करते, तथा अनुचित व्यवहार करते हैं।

कई अवस्थाओं में इसका परिणाम यह होता है कि 'दाम्पत्य जीवन सुख' के अभाव में पति को पर-स्त्रियों के साथ जी बहलाने में सुख की प्राप्ति होती है, और पत्नी को पर-पुरुषों की संगत में बैठने में अपनी क्षति की पूर्ति का सुख प्राप्त होता प्रतीत होता है; चाहे इसका मूल्य मृगतृष्णा से

अधिक नहीं । यह कितन दुर्भाग्य का बात है । इसका प्रभाव उनकी सन्तान पर पड़ता है, इस प्रकार बुराई फैलती जाती है । ऐसी दुःख भरी चिट्ठियाँ मेरे पास सदा आती रहती हैं, जिनमें इस प्रकार के गुप्त गम्भीर रहस्य पढ़कर रोगी के मान की रक्षा के लिए उन्हें जला देना ही उचित समझता हूं । एक-एक को पढ़कर शरीर के रोंगटे खड़े हो जाते हैं ।

स्वास्थ्य-दोप भी तो इस अन-बन के कारणों में से एक है । अस्वस्थ का स्वभाव चिड़चिड़ा हो जाता है । बहुत वार विवाह के वन्धन में आने से पूर्व नवयुवकों में खान-पान की बद-परहेज़ी (कुपथ्य), सिनेमाओं में देख सुनकर, बुरे उपन्यास (नावल) पढ़कर, और कुसंग से कुसीख लेकर आचार-भ्रष्ट होना और जीवन के तत्त्व वीर्य का यौवन की पूर्वावस्था में ही नाश करना, व्यायाम न करना, कोई एक दोष हो तो ! सारांश यह है कि आरोग्यता का नाश करने का नवयुवकों द्वारा पूरा-पूरा यत्न किया जाता है ।

अवस्था इतनी बिगड़ चुकी है कि आप लोग अनुमान नहीं कर सकते । केवल हकीम वैद्य तथा डाक्टर ही जानते हैं कि कितनी अधिक संख्या युवकों की विविध रोगों से ग्रसित है । यदि जीवन का मूलसार— वीर्य शरीर के अन्दर हो तो अन्य मिथ्या व्यवहारों का सामना करने की शक्ति मनुष्य में हो सकती है, परन्तु जब नव्वे प्रतिशत नवयुवक इस मूल तत्व को व्यर्थ खो चुके हैं, और अब तक भी ऐसा करने से नहीं रुकते, तो आरोग्यता कहाँ से स्थिर रहे ? वीर्य आरोग्यता की नींव है । जो मनुष्य इस नींव की रक्षा करता है, वह सुरक्षित रहता है, नहीं तो मृत्यु, या मृत्यु की सहायक दुर्बलता और अन्य भयंकर व्याधियाँ सम्मुख हैं ।

कई नवयुवक प्रश्न करेंगे कि यह कैसे हो सकता है कि वीर्य जिसके निकलने में परमात्मा ने इतना आनन्द भर दिया है, उसका बाहर आना व्याधि अथवा दुर्बलता का कारण होगा तथा उसको अन्दर रखने पर बल, पौरुष, वीरता और बुद्धि का प्रकाश निर्भर है । इसी प्रकार आप यह भी कहेंगे कि इसका क्या प्रमाण है कि वीर्य को अन्दर रखने में इतने लाभ, और व्यय अथवा नष्ट करने में इतनी व्याधियाँ हैं ?

देखिए, मैं समझता हूँ—जो कुछ हम खाते हैं उसका रस बनता है। रस से रक्त, रक्त से माँस, माँस से वसा (चर्बी), वसा से अस्थि और फिर मज्जा (जो अस्थि के अन्दर होती है), फिर वीर्य, और तदनन्तर ओज, बुद्धि, स्मृति। प्रकृति का नियम है कि जहाँ न्यूनता होगी, प्रकृति पहले उसको पूरा करेगी। प्रकृति के कार्यों का साक्षी जल है। जल सर्वदा अपना तल सम रखता है (Water keeps its level)। जहाँ गढ़ा है, प्रथम उसको ही भरा जाएगा। जब तक तो रस, रक्त, मांस, वसा, अस्थि, मज्जा और वीर्य शरीर में पूरे-पूरे अपने-अपने स्थान पर स्थिर हैं, तब तक जो कुछ हम खाते हैं, उसका शुद्ध भाग बारी-बारी से प्रत्येक धातु (रस, रक्त, माँस, वसा, अस्थि, मज्जा और वीर्य) को पुष्ट करता रहेगा। किसी भी धातु में न्युनता का प्रभाव दूसरी धातुओं पर पड़ता है।

जब वीर्य का व्यय अधिक हो तो मज्जा, अस्थि, वसा, माँस, रक्त, रस क्रमशः क्षीण होने आरम्भ हो जाते हैं और मनुष्य दिन प्रतिदिन दुर्बल होता चला जाता है। मस्तिष्क सबसे पूर्व ही प्रभावित होता है, क्योंकि वीर्य ही से मस्तिष्क की ज्योति बढ़ती है। जब वीर्य ही नहीं ठहरने पाता तो मस्तिष्क कहाँ से शक्ति और ज्योति प्राप्त करे? तो श्रीमान् जी! रक्त, मांस आदि के यूं कमज़ोर हो जाने से उस अभागे मनुष्य को विविध प्रकार की व्याधियाँ ग्रस्त कर लेती हैं। पाचन शक्ति, यकृत, हृदय, मस्तिष्क, वृक्क और नेत्र-दृष्टि सब दुर्बल होने लगते हैं। प्रमेह (धातु गिरना), स्वप्नदोष, शीघ्रपतन, कटि-शूल, अजीर्ण, सिर पीड़ा, वीर्य का पतला होना, स्त्री का ध्यान आते ही वीर्य का स्खलित हो जाना और सन्तानोत्पत्ति करने योग्य न रहना, भय, चिन्ता, एकान्तेच्छा, थोड़ा काम करने से अथवा चलने या भार उठाने से दिल की धड़कन तेज़ हो जाना, व्याकुलता, सिर में चक्कर आना आदि। यह दशा उनकी हो जाती है जो अपने जीवन के मूलतत्त्व वीर्य को इस प्रकार नष्ट कर देते हैं।

'यौवन' वास्तव में किसी विशेष आयु का नाम नहीं। यौवन तो वीर्य ही का नाम है। यदि १८ और ४० के बीच की आयु का नाम ही यौवन होता, तो आज हम १८ वर्ष के बूढ़े और ५० वर्ष के जवान न देखते। इसलिये मेरे

मित्रो ! वीर्य की रक्षा करो यौवन का वास्तविक आनन्द प्राप्त करो।

चौदह और बाईस वर्ष की आयु के मध्य का भाग अत्यन्त नाजुक (critical) होता है। इस आयु में जो बिगड़ गया सो बिगड़ गया, और जो बन गया सो बन गया। चौदह वर्ष की आयु में प्रायः वीर्य उत्पन्न होना आरम्भ होता है। वैसे तो वीर्य जन्मदिवस से ही शरीर में विद्यमान होता है, परन्तु इस प्रकार रहता है जैसे तिलों में तेल। प्रायः चौदह वर्ष की आयु में वीर्य अपना अस्तित्व प्रथक् रखने लगता है, मानो तिलों से तेल निकलना आरम्भ हो गया। चौदह से बीस वर्ष तक वीर्य कच्चा होता है। यदि इस बीच में वीर्य को व्यय किया जाए तो जिस प्रकार नींव के हिल जाने से मकान गिर जाता है, उसी प्रकार मनुष्य का शरीर रोगी होकर नष्ट हो जाता है। वीर्य जीवन है; वीर्य के व्यय से जीवन भी व्यय हो जाता है, वीर्य की समाप्ति मे जीवन की भी समाप्ति हो जाती है।

जो नवयुवक अपनी कच्ची आयु में जीवन के तत्व वीर्य को नष्ट कर देते हैं, उन्हें ज्ञान होना चाहिए कि यह कमी फिर कठिनता से ही पूरी होती है। इस कमी के पूरा न हो सकने का एक कारण और भी है। पहले तो नवयुवक बुरी संगति, उपन्यास या सिनेमा आदि से बुरे विचार ग्रहण करके राह चलते या अपने अड़ोस-पड़ोस के लड़के या लड़कियों को बुरी नियत से देखता या याद करता है, जिससे उसकी काम-वासना भड़क उठती है, फिर उनके ध्यान में निमग्न होकर हस्तमैथुन द्वारा वीर्य नष्ट करके झूठी खुशी प्राप्त करता है। जब नस, नाड़ियों पर कच्ची अवस्था में जोर पड़ता है तो वे दुर्बल हो जाती हैं, और कपड़े आदि की तनिक सी रगड़ से उकसाहट पैदा हो जाया करती है। दिन में दिमाग में घूमने वाले बुरे विचार रात को स्वप्न में अश्लील दृश्य दिखाते हैं, जिससे सोते-सोते वीर्य निकल जाता है। इसे स्वप्नदोष कहते हैं। जब रात को स्वप्नदोष होने लग गया, और दिन को लड़के ने स्वयं नष्ट करना चालू रखा, तो वीर्यकोष में वीर्य को रोक रखने की शक्ति ही नहीं रहती। इस दुर्बलता के कारण मूत्र के साथ भी वीर्य आने लग जाता है। इस रोग को प्रमेह या धात जाना कहते हैं। यह घुन का कीड़ा

है, जो नवयुवक को थोड़े ही दिनों में अन्दर से खोखला कर देता है, मुख मण्डल पीला पड़ जाता है, कुछ कार्य करने की शक्ति नहीं रहती, अच्छा भला खाते-पीते निर्बलता बढ़ती जाती है, वीर्य बहुत पतला हो जाता है, और उसको रोक-रखने वाले अंग दुर्बल हो जाते हैं; इससे सम्भोग के समय वीर्य शीघ्र ही गिर पड़ता है। इसे शीघ्रपतन कहते हैं। ऐसा पुरुष एक अर्थ में पुरुष नहीं रहता, उसे नपुंसक कहना चाहिए। लिंग में कठोरता या उत्तेजना पूरी नहीं आती, विवाह हो जाने पर सम्भोग में वह आनन्द प्राप्त नहीं होता जो स्वस्थ पति-पत्नी को प्राप्त हुआ करता है। इस प्रकार दोनों सम्भोग-सुख से वंचित रहते हैं। रोग बढ़ जाने पर पति में सम्भोग की शक्ति ही नहीं रहती।

यही कारण है कि कभी-कभी स्त्री पर-पुरुष का मुंह देखने के लिए लाचार हो जाती है, विशेषतः जबकि वह सन्तान की इच्छुक होती है। जब उसे अपने पति से यह इच्छा पूरी होती नहीं दीखती, तो वह पर-पुरुष की सहायता से उत्पन्न करना चाहती है। इस प्रकार उसके प्रति-प्रेम का एक और साझादार बन गया। तब पति से उसका पहला सा प्रेम नहीं रहता।

देख लिया, ब्रह्मचर्य क्षीणता का परिणाम! भूल मत जाना कि नष्ट हुआ यौवन लाख यत्न करने पर भी उस प्राकृतिक स्वाभाविक सुन्दरता के साथ पुनः नहीं लौट सकता। निःसन्देह यत्न करने पर उसमें शक्ति आ जायेगी परन्तु यह बात नहीं होगी। जोड़ फिर भी जोड़ ही है।

माना कि जोड़ के सिवाय चारा ही क्या है, और यह भी मानी हुई बात है कि ये वीर्य-रोग डाक्टरी चिकित्सा के बस के नहीं, केवल यूनानी और आयुर्वेदिक चिकित्सा पद्धतियों को ही वीर्य-रोग के निराकरण का श्रेय प्राप्त है, परन्तु अपनी कला में प्रवीण हकीम या वैद्य भी तो बड़े भाग्य से मिलता है। आजकल तो अवस्था यह हो रही है कि जिनका कुछ अध्ययन नहीं, कोई अनुभव नहीं, जिन्हें रोग परीक्षा और रोग-चिकित्सा के रहस्यों का कुछ बोध नहीं, जिन्होंने किसी आयुर्वेदिक या यूनानी कालिज में नियमपूर्वक २-४ वर्ष चिकित्साशास्त्र का अध्ययन नहीं किया, पूर्ण गुरुजनों के चरणों की धूल

तक स्पर्श नहीं की, वे इधर-उधर से कुछ नुसखे सुन सुना, चूर्ण-गोली तैलादि बना लेबल लगा, दुकान सजा, डाक्टरी सामान बेचने वालों से कुछ यन्त्र ला, चित्रादि की प्रदर्शनी कर, रोगियों पर प्रभाव डालते हैं, और औषधियों के पीछे दाम आदि लेने का प्रलोभन देकर रोगियों को फंसाते और ठगते हैं। भला, जो सुयोग्य और गुणवन्त, अनुभवी, सुयशप्राप्त वैद्य डाक्टर हैं, वे इस प्रकार की घटिया इश्तहारबाज़ी क्यों करेंगे ? अस्तु, यह तो बात में बात आ गई। अभिप्राय यह है कि भाग्य से ही सर्वगुण-सम्पन्न वैद्य मिलता है; अथवा भाग्य से ही रोगी उससे नियमपूर्वक, धैर्यपूर्वक तथा विश्वासपूर्वक चिकित्सा कराने का संकल्प करता है।

यह बात पल्ले बांध लीजिये कि कोई भी रोग हो, तब नहीं हटता जब तक कि उसके मूल कारण को न हटाया जाय। प्रथम तो वीर्य-नाश में आपका जितना कसूर है उसे दूर करो और कान को हाथ लगाओ कि फिर कभी किसी प्रकार भी वीर्य नष्ट न करोगे। किसी के रूप, चित्र, अंग, प्रत्यंग का और विषय-विकार का, ध्यान तक मन मे कदाचित नहीं आने दोगे।

यहाँ एक अनुभव की बात बता देता हूं। कई नवयुवक मुझे आकर सुनाते हैं कि वे तो मन को बहुत समझा कर रखते हैं, परन्तु जब कोई अवसर वीर्य नाश करने का आ बनता हैं, तो होश मारी जाती है।

मैं बता दूं कि दोष कहाँ है। नवयुवक कहता है –"अच्छा, किसी सुन्दरी के चिन्तन का थोड़ा सा आनन्द उठा लूँ, जरा पत्नी के शरीर पर प्यार का हाथ फेरकर जी बहला लूँ, तनिक सुन्दर मुखड़े का दर्शन करके अपने नेत्रों को तृप्त कर लूं। मैं इससे अधिक कुछ न करूंगा, मैं वीर्य नाश वाला कार्य ही न करूंगा।" बस यही सब खराबी का मूल है. क्योंकि उपरोक्त में से 'जरा' कुछ करते ही कामवासना इतनी प्रदीप्त हो जाती है कि फिर रोके नहीं रुकती। मित्रो ! बचो इस 'जरा' से, इस 'जरा' और 'तनिक' ने लाखों नवयुवकों का यौवन मिट्टी में मिला दिया, सदा का रोगी बना दिया।

प्यारे नवयुवकों ! ये सब बड़ी दुखदायक बीमारियाँ है। ये यौवन के आनन्द को हर लेती हैं। इससे डरो, अपने यौवन पर तरस खाओ। जिसको

एक बार भी वीर्य का कोई रोग हो गया, फिर उसकी घबराहट और व्याकुलता का अनुमान लगाना कठिन है। दुर्भाग्य से ऐसी बीमारियों को नवयुवक छिपाने का प्रयत्न करते हैं, और इश्तहारी वैद्यों के सूची-पत्र पढ़कर दवाई मंगाते हैं और अपना रोग बढ़ा लेते हैं।

हम वैद्य और डाक्टर प्रतिदिन सैकड़ों दुखियों को देखते हैं, इस कारण हमारे दिल स्वाभाविक कुछ मजबूत होते हैं। फिर भी मैं तो जब कभी अपने पैरों पर आप कुल्हाड़ा मारने वाले, वीर्य नाश करने वाले नवयुवक को देखता हूं तो बहुत शोकातुर हो जाता हूं। रोगी बेचैन होता है, हाथ जोड़ता है, पांव पड़ता है, ठंडी सांसें भरता है और कहता है—"वैद्य जी ! अब अधिक सन्ताप सहन नहीं कर सकता। मेरी जवानी मुझे मिला दो, इसके वियोग में मैं दीवाना और पागल हो रहा हूं।"

प्यारो ! इससे अधिक क्या कहूं ! यौवन तुम्हारे पास है, इसका निरादर न करो। इसका विनाश न करना, अन्यथा हाथ मलोगे और पछताओगे। यदि भूल कर बैठे हो तो बीती बात का क्या रोना। मैं आपका यौवन आपसे मिला देने के लिए पूर्ण यत्न करूंगा. परन्तु सच्चे दिल से प्रतिज्ञा करो कि फिर वह अनर्थ न करोगे, जो तुम्हारे इस दुःख और रोग का कारण बना।

अब मैं उनसे कुछ कहना चाहता हूँ जिनका विवाह अभी हुआ है या शीघ्र ही होने वाला है। याद रखो कि नौजवान लड़की का मन कोमल बेंत की कोमल शाखा के समान होता है, जिधर आप मोड़ेंगे, उधर मुड़ जायगा। यदि आपने पहली रात ही छेड़छाड़ आरम्भ कर दी, तब उससे वह यह समझेगी कि विवाह का उद्देश्य केवल सम्भोग है। फिर तो वह समय भी दूर न समझिए जब आप कहेंगे, "मैं आज थका हुआ हूं, मुझे सोने दो" और वह इसका उत्तर यह देगी कि "पहले मुझे वह पाठ पढ़ा दो, जो विवाह के पहली रातों में पढ़ाया था।" अन्ततः वह या तो आपको लाचार करेगी, या निराश हो जाएगी। उस दशा का अनुमान करके मेरा दिल धड़कने लग जाता है। इस विषयलोलुपता के भयानक पाठ से स्वास्थ्य गया, गृहस्थ का आनन्द गया, स्त्री का प्रेम गया और स्त्री गई, आदर गया और अन्त में वह शक्ति

गई जिसका मिथ्या प्रयोग सब दुःखों की जड़ है ।

मेरे पास प्रति मास कितने ही ऐसे पुरुष आते हैं, जो अपने पुरुषत्व की दुर्बलता की दीन कथा बड़े हो हृदय भेदी शब्दों में वर्णन करते हैं । एक ऐसे ही धनीमानी पुरुष ने बड़े दुःखभरे शब्दों में अपनी अवस्था वर्णन करते हुए मुझे इस प्रकार लिखा—

"डाक्टर साहब ! अधिक लिखने से क्या लाभ; अपने हृदय का घाव ही खोलकर आपको दिखाता हूं । पत्नी मुझ से निराश हो रही है, क्योंकि विषय-भोग की अधिकता के कारण अब मेरी शक्ति बहुत घट गई है । कुछ समय तो ऐसी अवस्था बनी रही, कि जिस दवा का रोचक विज्ञापन पढ़ा, झट मंगवा ली; किन्तु सब व्यर्थ । आज सायंकाल आपका नाम अपने शहर की एक प्रतिष्ठित सोसाइटी में सुन पाया । अब रात के साढ़े बारह बजे हैं, किन्तु चाहता हूं कि सो जाने से पहले ही आपको अपनी कथा लिख दूं । मुझे कोई शक्तिवर्धक औषधि दीजिये, नहीं तो मुझे हर समय भय है कि कहीं मेरी पत्नी मुझ से पूर्णतया निराश न हो जाय, या परमात्मा न करे, कुपथगामी ही हो जाय । वह पवित्रात्मा थी, भोली-भाली थी, वह तो साक्षात देवी थी, उसे मालूम ही न था कि विषय-भोग क्या वस्तु होती है । धीरे-धीरे मेरी कुसंगति ने उस पर भी प्रभाव डाला । उसकी कामवासना बड़ी प्रबल हो उठी, और दुर्भाग्यवश मेरी शक्ति विषय विलासिता की अधिकता के कारण घटने लगी । यह बात आखिर कब तक छिपी रहनी थी ? उसे मेरी दुर्बलता का कभी तो पता लगना ही था । रुपये की मेरे पास कमी न थी ? सब प्रकार की शक्तिवर्धक, स्तम्भक, कामोत्तेजक गोलियां, विज्ञापनों तथा सूचीपत्रों में पढ़-पढ़ कर, मंगा-मंगा कर खा डालीं, किन्तु स्थायी शक्ति न आई । पत्नी ने बहुत सहा, परन्तु अन्त में परसों रात को सारी लज्जा और शर्म को त्याग कर के कह दिया—"अपना इलाज कराओ, नहीं तो पछताओगे ।" मेरी छाती पर मानो तीर-सा लग गया । अपने पांव पर अपने ही हाथों कुल्हाड़ी मारी, उसे क्योंकर बुरा कहूं ? सो मैंने भी लज्जा को दूर फेंक कर आज पच्चीस-तीस साथ बैठने-उठने वाले मित्रों में स्पष्ट ही कह दिया कि "भाई, मैं

तो मरा जाता हूं।" चार-पांच मित्रों को आपका निज रूप से अनुभव था। उन्होंने आपके विषय में कहा। मिस्टर···की पैन्सिल से लिखी हुई चिट्ठी साथ भेजता हूं . अब तो मेरी लाज, मेरा स्वास्थ्य, मेरा सुख, मेरा जीवन, सब कुछ आपके हाथ में है।···"

मेरे हृदय पर इस चिट्ठी का बड़ा दुःखद प्रभाव पड़ा। मैं सोचने लगा कि यह व्यक्ति क्यों इस आपत्ति में पड़ा। वास्तव में इसने विवाहित आनन्द (Husband's Guide Book) के "पहली रात" के प्रकरण में लिखी आवश्यक शिक्षाओं पर आचरण नहीं किया। माना कि सभी विवाह से पूर्व विवाहित जीवन सम्बन्धी पुस्तकें नहीं पढ़ते, परन्तु इसने यह भी तो नहीं सोचा कि 'जवानी सदा एक जैसी नहीं रहती।" मुझे अनेकों ऐसे पुरुषों का ज्ञान है जो विवाह से पहले हृष्ट-पुष्ट थे, गालों से लाली टपकती थी, और वीर्य बहुत गाढ़ा था, किन्तु अधिक विषयभोग के कारण एक-दो-तीन वर्षों में ही उनके सुन्दर मुखड़े पीले पड़ गये, वीर्य उनका पानी के समान पतला पड़ गया। अब पुरुष तो हो गया निर्बल, और स्त्री में रही वही शक्ति और वही उमंग। पुरुष को निःशक्त होते हुए भी पत्नी के पास जाना पड़ता है, नहीं तो भेद आज भी खुला और कल भी।

ठीक नियमपूर्वक औषधि सेवन करने की तो ऐसे लोगों को समझ ही नहीं होती। वैद्य हकीम भी जो मिलता है, कहता है कि "अभी लो, हाथ पर सरसों जमा दूंगा। तुम जेब से रुपया तो निकालो।" कोई कहता है कि "सात दिन में पूर्ण लाभ देख लो", तो दूसरा कहता है "अजी सात दिन तक क्यों लटकते रहो, एक-दो दिन में अच्छे हो लो।" (ऐसे विज्ञापन सभी राज्याधिकारी पढ़ते हैं, परन्तु भारत की यौवनारूढ़ होती सन्तानों की उन्हें क्या चिन्ता? उन्हें यह भी नहीं सूझता कि शायद उनके ही लड़के-पोते, भतीजे ऐसी कुटेवों में, ऐसे रोगों में, और ऐसे इश्तहारबाजों के पंजों में ग्रसित हों, या हो सकते हैं।) अस्तु। ऐसे छूमन्तर से वर्षों के रोग को ठीक कर देने वालों द्वारा दिये गये संखीया तांबा आदि विषैले उत्तेजक पदार्थों के सेवन से शरीर की दशा और भी बिगडती जाती है। कई वैद्य हकीम, अपनेपंजे में फंसने वाले

ऐसे मूर्ख रोगियों को कह देते हैं, "अजी महाशय जी ! हमारी दवाई ऐसी गज़ब की है, कि इसके साथ किसी पथ्य-परहेज़ की आवश्यकता ही नहीं हमारी दवाई खाते जाओ और आनन्द भोगते जाओ।" ऐसा नहीं चाहिए, प्रत्युत दो-चार मास स्त्री से दूर रह कर और नियमपूर्वक चिकित्सा कराके स्वास्थ्य-लाभ किया जाय, और फिर आगे को सावधानी से बर्ता जाए।

कई स्त्रियाँ पति के पास इस कारण से भी नहीं बैठना-उठना चाहतीं, कि पति रोगी है और पत्नी की उचित मांग को पूरा नहीं करता, जिससे स्त्री को बहुत निराशा होती है। बार-बार की निराशा से कुछ समय पीछे ऐसी स्त्री पति से दूर-दूर रहने में ही अपना हित समझने लगती है। वह मुख से तो कुछ नहीं कहती, किन्तु पति को दूर धकेलती है।

"सम्भोग में पुरुष क्यों शीघ्र क्षरित होता है ? स्त्री क्यों देर से द्रवित होती है ?" कई लेखकों ने इस प्रकार के शीर्षक देकर जनता को भ्रम में डाला है। इस विषय में विस्तारपूर्वक तो 'विवाहित आनन्द' में लिखा गया है, परन्तु संक्षेप से मैं आपको बता दूं कि बात वास्तव में यह है कि पुरुष शीघ्र क्षरित होता है—अपनी बचपन की कुटेबों और यौवन की विषय-विलासिताओं से। स्त्री देर में द्रवित होती प्रतीत होती है'—इस कारण से कि पति शीघ्रपतन रोग के कारण शीघ्र क्षरित हो गया और स्त्री को द्रवित या आनन्दित होने का अवसर ही न मिला। अन्यथा यह प्रकृति की कदापि इच्छा नहीं, कि व्यर्थ पुरुष को लज्जित कराए। पुरुष अपनी कुटेबों के कारण ही शीघ्रपतन के रोग में फंस जाते हैं। यदि ऐसा नहीं है तो हम चिकित्सा द्वारा रोग को शान्त करके स्तम्भन शक्ति इतनी कैसे बढ़ा देते हैं ?

अमेरिका के एक अमीर कारखानेदार की पत्नी ने वहाँ के एक बूढ़े पादरी फ्रैंकलिन साहब के आगे अपना क्रोध प्रकट करते हुए यह कहा कि "आप मेरे पति को इस बात पर राज़ी करें कि हमारा विवाह-सम्बन्ध टूट जाय।" वह कारखाने का मालिक अपने व्यापार के सम्बन्ध में एक वर्ष के लिए भारतवर्ष आना चाहता था, और अपनी पत्नी को भी साथ लाना चाहता था। परन्तु पत्नी अपने पति के उपर्युक्त रोग के आधार पर उससे तलाक

(विवाह-सम्बन्ध टूट जाने की अनुमति) लेना चाहती थी।

पादरी फ्रैंकलिन साहब भारतवर्ष में बहुत दिनों तक रह गये थे, और शिमला में उनके साथ मेरी मित्रता हो गई थी। वे मुझसे अपने ईसाई भक्तों के स्वास्थ्य के विषय में प्रायः परामर्श लेते रहते थे। दो-चार गुप्त रोगों से पीड़ित अंग्रेज़ी की चिकित्सा के सम्बन्ध में वे मेरी सफल सेवाओं से बहुत प्रभावित थे, और जहाँ-तहाँ मित्रों में मेरा नाम लेते थे। इसलिए उन्होंने इन मेम साहिबा से कहा कि "अभी तलाक का विचार छोड़ दो, और भारत पहुँच करके कविराज हरनामदास बी० ए० से सम्मति लो। भारतीय चिकित्सक ऐसी परिस्थिति में अधिक अच्छी सम्मति दे सकते हैं।" भारत पहुँचकर वह मेम अपने पति को मेरे पास ले आई। आते ही उसने 'गुड मार्निंग, गुड मार्निंग' अर्थात् नमस्ते, नमस्कार के बाद मेरा हाथ पकड़ लिया और कहने लगी, 'देखो डाक्टर साहब! फादर फ्रैंकलिन मुझ से कहते थे कि मिस्टर कविराज पतझड़ को बसन्त में परिवर्तित कर सकते हैं।' मैंने कहा कि इस नाम के एक अमेरिकन पादरी साहब मेरे मित्र हैं। क्या पादरी साहब जीवित हैं? वे तो बहुत बूढ़े थे। मेम साहब ने कहा कि "परमात्मा के नाम पर, इधर-उधर की बातों को जाने दीजिये, और मेरी बात ध्यानपूर्वक सुनिए! आप ही न्याय कीजिये, डाक्टर साहब? एक भूखा आदमी अपने रास्ते पर चला जाता हो तो वह आपका कुछ नहीं बिगाड़ता। उसे परमात्मा ने जिस स्थिति में रखा है, वह उस में सन्तुष्ट है। परन्तु यदि आप उसे बुला लेते हैं और कहते हैं कि आओ, तुम को रोटी दूँ, और उसके आ जाने पर आप उसे रोटी देते नहीं, तो बताओ डाक्टर साहब! सच-सच बताओ आपको अपनी बीवी की कसम, ठीक-ठीक बताओ, क्या इससे बढ़ कर कोई अत्याचार हो सकता है?" मैंने कहा—ऐसा करेगा ही कौन? वह बोली कि "ये आप के सामने बैठे हैं।" और फिर उनके गले फूट-फूट कर रोने लग पड़ी। कुछ देर में आँसू पोंछ कर मुझ से बोली—"डाक्टर साहब, मैं इनसे बहुत प्रेम करती हूँ, और ये हैं भी प्रेम करने योग्य। ये भी मुझ से बहुत प्रेम करते हैं, परन्तु ऐसी छेड़-छाड़ क्यों करते हैं, जिसको निबाहने की इनमें शक्ति ही नहीं।"

जब मैंने उनका सारा वृतान्त सुना तो पता लगा कि थोड़े से अन्य दोषों के अतिरिक्त पति शीघ्रपतन का रोगी था, और स्त्री की इच्छा पूर्ण नहीं कर सकता था। अस्तु, मैंने उनको विस्तारपूर्वक परामर्श और औषधि देकर विदा कर दिया। दो मास के पश्चात् बम्बई से उनकी बहुत सन्तोषजनक रिपोर्ट आई। इस केस में एक बात यह थी कि वे सदा अपने व्यापारिक धन्धों और दफ्तरों की फाइलों में इतने व्यस्त रहते थे, कि पत्नी का मन बहलाने की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे।

यह तो हुई किसी व्यक्ति विशेष की आप-बीती। अब ब्रह्मचर्य पालन और यौवन रक्षा में आपको अधिक प्रवृत्त करने के लिए कुछ विशेष समझाता हूँ। तनिक उस सृष्टिकर्त्ता की कारीगरी की ओर तो देखें, जो एक पुरुष के वीर्य में करोड़ों कीट उत्पन्न करके प्रत्येक कीट को उस पुरुष की प्रतिमूर्ति ही बना देता है। प्रायः पिता पर पुत्र जैसा रूप होता है कि नहीं? शोक है कि पुरुष प्रकृति की इस अनुपम वस्तु को व्यर्थ ही नष्ट करते रहते हैं और प्रकृति को विवश करते हैं कि वह उनके दुराचरम का उनसे बदला ले।

व्याख्यान के बीच में एक नवयुवक हाथ उठाकर खड़ा हो गया। जब वह एक मिनट यों ही खड़ा रहा, तब तक एक हास्यध्वनि गूंज उठी। किसी दूसरे नौजवान ने फबती कसी—"भाई साहब समझ रहे हैं कि वे इस समय भी स्कूल की क्लास में हैं।" नवयुवक ने गम्भीरतापूर्वक उत्तर दिया कि "मैं तो यथार्थ में ऐसा ही इस समय अनुभव करता हूँ। जिस प्रकार हम स्कूल-रूम में अपने मास्टर साहब की ज्ञानगरिमा या विद्वत्ता से चकित रह जाते थे, उसी प्रकार आज कविराजजी की विद्वत्ता, बुद्धिमत्ता और अनुभवपूर्ण उपदेशों से हम सब गदगद हो रहे हैं। परन्तु क्या किसी मास्टर, प्रोफैसर, माता-पिता या किसी अन्य सम्बन्धी ने हमें कभी ऐसी बातें बताईं? मैंने तो आज अपने हृदय में निश्चय कर लिया है कि नित्य दो चार नवयुवकों को इस व्याख्यान का संक्षेप सुनाऊंगा और पुण्य का भागी बनूंगा। मैं कविराज जी से प्रार्थना करता हूं कि हमें बताएं कि नौजवानों को दुराचार के कारण होने वाले रोगों के क्या-क्या लक्षण हैं, और उनसे किस प्रकार छुटकारा पाया जा सकता है।"

कविराज जी ने कहा कि यह बड़ा विस्तृत प्रश्न है। विवाहित आनन्द' के २४८ पृष्ठों में से लगभग ६० पृष्ठ मैंने इन रोगों और इनकी अति सरल चिकित्सा की भेंट कर दिए हैं। यहां मैं उन रोगों का वर्णन संक्षेप से किये देता हूं; अधिक कुछ कहने के लिए तो अब समय ही नहीं रहा, पौने दो घण्टे बीत गए हैं, परन्तु आप लोगों ने जो उत्साह दिखाया है तथा जैसे ध्यानपूर्वक सुनते रहे हैं, मैं आधा घण्टा और भी आपकी भेंट कर दूंगा।

(पाठकगण ! स्थानाभाव से वह लम्बा उत्तर यहां नहीं लिखा जा सकता। 'विवाहित आनन्द' में सब कुछ सविस्तार लिखा हुआ मिलेगा।)

रोग-सम्बन्धी प्रश्नों के उत्तर सुन चुकने के पश्चात् एक नवयुवक ने पूछा कि क्या आपके औषधालय का कोई सूचीपत्र है ? कविराज ने उत्तर दिया "मेरे आज के व्याख्यान का उद्देश्य केवल यही है कि आप औषधालयों, औषधियों और औषधियों के सूचीपत्रों से बच जाएं। आपकी सूचना के लिए कह दूं कि मैंने औषधियों का कोई सूचीपत्र नहीं छपवाया। आपने कोई औषधालयों के बड़े-बड़े सूचीपत्र देखे होंगे, जिनमें बहुत अत्युक्ति और आत्मप्रशंसा (Self-praise) भरी पड़ी होती है। एक-एक औषधि के गुण-गान में बीसियों पंक्तियां लिखी होती हैं। मैं भी यदि चाहता तो बड़ी सुगमता से डेढ़ दो सौ पृष्ठों की औषधियों की सूची जनता के सामने रखता किन्तु नहीं मेरा यह विश्वास है और वर्षों का अनुभव है, कि औषधियों की सूची या विज्ञापन पढ़ कर एक रोगी अपने लिए कभी ठीक-रीति से औषधि नहीं निश्चित कर सकता। उसे न तो अपनी प्रकृति का ही पूरा पता होता है और न ही यह पता होता है कि किस प्रकृति के रोगी के लिए तथा रोगी की किस अवस्था में कौन सी औषधि लाभदायक होगी, या उस प्रकृति तथा अवस्था में क्या अनुपान और क्या पथ्य-परहेज सर्वोत्तम होगा। सच पूछो तो 'रोग के कारण' और 'रोग के लक्षण' सबके विभिन्न होते हैं। प्रायः प्रत्येक रोगी का अपना-अपना इतिहास होता है, जो उसी रोग के अन्य रोगियों से विभिन्न होता है। इसलिए जो लोग विज्ञापन या सूचीपत्र देख कर औषधि मंगाते हैं, वे प्रायः लाभ से वंचित रहते है।"

सभा-प्रधान रायबहादुर कैप्टेन भंडारी के धन्यवाद के पश्चात् सभा विसर्जित हुई।

हम

औषधियों का विज्ञापन

नहीं देते,

और न किसी रोगी का नाम पुस्तक
या विज्ञापन में छापते हैं।

हम

औषधियों का सूचीपत्र नहीं छापते

जब तक

रोगी का पूरा हाल न आए, हम औषधि नहीं भेजते। रोगी की आरोग्यता और हमारे यश के लिये आवश्यक है कि रोग परीक्षा-पत्र मंगा कर सारा हाल उसके अनुसार हमें लिखा जाए। सब पत्र-व्यवहार गुप्त रखा जाता है; अच्छा हो यदि स्वयं मिलें।

पत्र व्यवहार तथा मिलने का पता—

कविराज हरनामदास बी० ए० एण्ड संज

गौरीशंकर मन्दिर के नीचे, लाल किले के पास, चाँदनी चौक, दिल्ली-6

तार का पता—'कविराज देहली'] [फोन नं० 278365

निम्न सूचना आपके लिए उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

एक श्रीचन्द ने अपना नाम श्रीचन्द से हरनामदास बदल लिया। वह कविराज हरनामदास नाम से, चांदनी चौक में (एक मकान की ऊपर की मंजिल पर, अपनी पत्नी डाक्टर विमला के साथ) प्रेक्टिस करने लगा। वह बी० ए० न था। ८ श्रेणी तक पढ़ा था, परन्तु अपने नाम के साथ बी० ए० पी० जोड़ रखा था। उसका देहान्त १६७२ में हो गया। तो भी उसकी विधवा डाक्टर विमला उसके नाम से कई पत्रों में विज्ञापन छपवाती है, जैसे कोई समझे कि वह जीवित है। कई लोगों को भ्रम हुआ कि कविराज हरनामदास बी० ए० वहीं पर हैं, सो वे कम्पाऊंडर से दवा ले आये।

पत्र व्यवहार में या औषधालय में पधारते समय हमारे सुखदाता चिन्ह को औषधालय के द्वार पर अवश्य देख लें।

*हमारे पास पधारने में सीढ़ियों पर नहीं चढ़ना पड़ता। सचेत रहें।

नोट :—"बी० ए० पी०" किसी कालिज अथवा शिक्षण संस्थान की प्रमाणित डिग्री नहीं है, केवल जनता को धोखा देने के लिए लिखा गया है।

(प्रबन्धक)

12000 — 15-3-75 जय्यद प्रेस देहली

लेखक की कुछ सुप्रसिद्ध पुस्तकें

केवल भोजन द्वारा स्वास्थ्य—यह सर्वथा सत्य है कि रोग से छुटकारा पाने में औषधि की अपेक्षा व्यवस्थित भोजन अत्यधिक गुण करती है। बाल, वृद्ध, युवा, क्लर्क, मजदूर, विद्यार्थी, गर्भिणी आदि के भोजन में कुछ भिन्नता होनी ही चाहिए यह सब विचार कर भोजन करने से ही स्वास्थ्य बनेगा। रोग आने पर, भोजन की उलटफेर से ही चिकित्सा कर लेने को, तथा स्वास्थ्य और लम्बी आयु व्यतीत करने को इस पुस्तक से सहायता लेना आवश्यक है। इस पुस्तक में खाने-पीने की २०० प्रमुख वस्तुओं के गुण-अवगुण, हानि-लाभ लिखे हैं। जब कभी स्वास्थ्य में गड़बड़ हो, यह पुस्तक देखकर पथ्य-भोजन से शीघ्र स्वस्थ हो सकते हैं। तदर्थ प्रत्येक घर में यह पुस्तक उपस्थित रहनी चाहिए। २२४ पृष्ठ, २१ चार्ट। १९२४ से ३ लाख से अधिक बिक चुकी है। मूल्य हिन्दी, उर्दू पंजाबी 3-50

पत्नी पथ-प्रदर्शक—अच्छी भली पढ़ी-लिखी स्त्रियां जब अपने पति, सास, ससुर, जेठ, ननद आदि के लिए पूर्ण सुख-सन्तोष का कारण नहीं बनतीं, तो कहा जा सकता है कि कहीं तो भूल अवश्य है। बहुत बार एक अवगुण या एक भूल पचासों गुणों को मिट्टी में मिला देती है, और घर भर को नरक बना डालती है। इस पुस्तक में एक सौ से अधिक ऐसी 'भूलों और उनके सुधार' का सविस्तार वर्णन करके पारिवारिक सुख शान्ति की स्थापना का प्रबन्ध कर दिया है। १९२ पृष्ठ। १९२६ से ३ लाख से अधिक बिक चुकी है हिन्दी, उर्दू पंजाबी में सर्वत्र बिकती है। उर्दू, पंजाबी में नाम 'हदायत नामा बीबी' है। मूल्य 3-0

विवाहित-आनन्द—विवाहित जीवन के मार्ग मे
काटे, सैकड़ों फूल, हज़ारों मुस्कराते हैं, लाखों आँसू ब
इसका समाधान होना चाहिए। इस पुस्तक की बिद्या
उठाने वाले पति के घर में सदा प्रेम-प्रमोद, परस्पर आ
सहयोग, सुमति और सुख-शान्ति की वर्षा होती है
पृष्ठ। १९२५ से ५५ बार छप चुकी है। मूल्य हिन्द
पंजाबी, अंग्रेज़ी 3-50 तिलगू 3-50

हमारी पुस्तक १९२४ से सब पुस्तक विक्रेता
बेचते हैं। हम पुस्तकों में औषधियों के विज्ञापन
नहीं देते।

कविराज जी से मिलने के समय और स्थान :=

कविराज हरनाम दास बी० ए० एण्ड संज़,

(१) सुखदाता फ़ार्मेसी, गौरीशंकर मन्दिर के नीचे,
लाल किले के सामने, चाँदनी चौक, दिल्ली-६
प्रतिदिन प्रातः ९ बजे से १२ बजे (रविवार बन्द)

(२) पुल बेगम, मेरठ (केवल मंगलवार ५ से ८ बजे सा०)